9355

श्री
गरसूरि
दिर,
धीनगर

तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

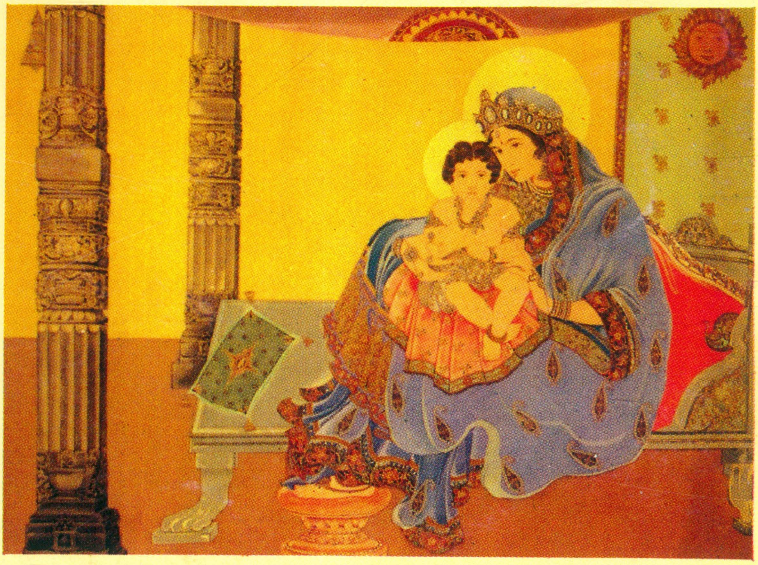

वर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

आचार्य श्री कैलास सागर सूरि ज्ञान मन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र,
कोबा, जि. गांधीनगर, पीन–३८२००९

वर्ष : २६ अंक : ७
अक्टूबर २००२

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073 (05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/ 8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २६ अंक - ७, अक्टूबर २००२

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 238-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 238-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-238-2655. e-mail - jbhawan@cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	कर्म की कहानी	पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी	२९१
२.	परमात्मा पार्श्व व धरणेन्द्र-पद्मावती	ललित कुमार नाहटा	३०७
३.	पाटलिपुत्र का इतिहास	पं० प्र० यतिश्री सूर्य्यमलजी महाराज	३११

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दुगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दुगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

स्वामीजी बोले........इस भयंकर पाप का प्रायश्चित एक मात्र नरक ही है, फिर भी काशी में जाकर गंगा किनारे सन्यासी को भोजन कराने से (भण्डारा करने से) कुछ कम हो सकता है। वह व्यक्ति पाप के भय से इतना भयभीत हो गया कि घर न जाकर सीधा काशी जाकर सन्यासी को भोजन कराने का आयोजन किया। सभी आश्रमों में आमंत्रण दिया गया । भोजन करने सभी सन्यासी आये, भोजन करके अपने-अपने स्थानों पर चले गये। इसमें एक युवा संन्यासी था, जो अधिक समय ध्यान में रहता था। आज चित्त एकाग्र न होने के कारण गुरुजी के पास अपनी समस्या रखी। गुरु जी..! जब-जब मैं चित्त को एकाग्र करने का प्रयास करता हूँ मेरे सामने एक नवयौवना आकर खड़ी हो जाती है और रोती है। गुरुजी सभी बाते जानने के बाद बोले...... यह भोजन का प्रभाव है, जाओ........भोजन कराने वाले से यह जानकारी लो कि किस निमित्त से उसने आज भोजन करवाया है। सभी बाते जानने के बाद जब उन्होंने कहा कि जब तक अन्न का प्रभाव शरीर में होगा तब तक वही स्थिति रहेगी क्योंकि यह अन्यायोपार्जित धन है।

इसलिए न्याय पूर्वक धन उपार्जन करने का उपाय अपनाना चाहिए।

नीतिवान की कुछ प्राचीन अर्वाचीन घटनायें —।

(१) कुछ दिन पूर्व मेरठ शहर में एक रिक्शाचालक को साठ हजार रुपया भरा एक बैग मिला, उसे उसने अपने पास रखना अनुचित समझकर उस उक्त धन को वास्तविक मालिक को पहुँचाया। धन पाकर मालिक अति प्रसन्न हुआ। इनाम स्वरूप उसे कुछ देना चाहा पर उसने अस्वीकार कर दिया और कहा....... यह तो मैंने मेरे कर्तव्य का पालन किया है कोई उपकार नहीं या धन पाने के बदले में नहीं।

(२) भगवान महावीर का परमभक्त पुणिया श्रावक। शुद्ध सामायिक

करने के कारण भगवान महावीर के पास इनका विशिष्ट स्थान था। एक दिन सामायिक करने बैठे थे, पर मन अशांत रहा लाख प्रयत्न करने पर भी एकाग्रचित्त नहीं हो पायें। बेचैन हुए, थक कर अपनी पत्नी से कुछ कारण जानने का प्रयास किया पर प्रथम तो कोई कारण नहीं ज्ञात हुआ। आज की सम्पूर्ण दिनचर्या पर दृष्टिपात करने पर पता चला कि वह घर लीपने के लिये किसी के वहाँ से बिना पूछे गोबर लाई थी। सम्बन्धित व्यक्ति से क्षमा याचना करने पर ही मन को शांति हुई।

(३) नीतिमान भीम— जैनाचार्य जगतचन्द्र सूरिजी के समय भीम नाम का एक श्रावक हुआ। जो सत्य वचन और नीति बोध और नीतिवान के लिये प्रतिष्ठित था। एकबार म्लेच्छों ने आक्रमण कर धन के साथ सेठ भीम को भी ले गये। उन्हें छुड़ाने के लिये उनके पुत्र ने म्लेच्छों को चार हजार टाँक (उस समय रुपया जैसा एक मुद्रा) दिये। वे मुद्रा असली है या नकली म्लेच्छों ने सत्यवादी भीम से ही जानना चाहा। भीम मुद्रा देखते ही समझ गये कि पिता की मुक्ति के लिये पुत्र ने अन्याय किया है। इस असत्य को सत्य करना भीम के वश की बात नहीं थी। उन्होंने सत्य वस्तुस्थिति बता दिया। परिणाम यह आया कि लुटेरों ने इनकी सत्यवादिता पर प्रसन्न होकर उन्हें मुक्त कर दिया।

(४) कमलापति त्रिपाठी (निरालाजी) हिन्दी के ख्यातिनाम कवि और स्वतन्त्र सेनानी थे।

एकबार अपने द्वारा लिखित एक किताब की रायल्टी एक हजार रुपया लेकर रिक्शा में बैठकर घर जा रहे थे। रास्ते में एक कृषकाय भिखारिणी वृद्धा मिल गई। जो दयनीय जीवन निर्वाह कर रही थी। अपना शेष जीवन पूर्ण करने के लिए खुले आसमान में बैठकर राहगीर से १/२ पैसे की यांचना कर रही थी। उस असहाय वृद्धा को देखकर कविहृदय पिघल गया। रिक्शा रोक कर वृद्धा के हाथ में एक रुपया देते हुए बोले— मां! और रुपये की कितने दिन आवश्यकता नहीं होगी।

वृद्धा बोली........आठ दिन। फिर और २/५ रुपया देते गये, पूछते गये, आखिर सभी रुपया देकर पूछते है....मां ! अब कितना दिन शांति से बैठकर खा सकती हो? वृद्धा बोली......बेटा ! अब तो सारा जीवन किसी

के पास हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं होगी। निरालाजी एक मुस्कान के साथ परमशांति की अनुभूति करते हुए खाली हाथ घर पहुँचे। आज उन्हें एक माता की सेवा का अपार आनन्द प्राप्त हुआ था।

इस प्रकार नीतिवान और जीव प्रेमी हमें बनने का प्रयत्न करना चाहिए। सुपात्र में लगाया गया धन कभी नष्ट नहीं होता और देने वाला कभी भूखा नहीं रहता है। नीति का धन पाताल कुंएँ का पानी जैसा है और अन्याय का धन तालाब का पानी जैसा है।

जबतक सर्वत्यागी साधु न बन सके तब तक न्याय मार्ग से धनोपार्जन करके जीवन निर्वाह करना चाहिए।

परम तारक परमात्मा ने पाप के अनेक निमित्त बताये है। इसमें १८ पापस्थानक मुख्य है। गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के लिये इन पापो का न्युनाधिक सेवन स्वाभाविक हो जाता है। परन्तु हर गृहस्थ को कम से कम पापा चरण द्वारा जीवन जीने का प्रयत्न करना चाहिये।

परमात्मा भक्ति—गृहस्थ धर्मी के लिए परमात्मा की भक्ति एक उत्तम साधन माना गया है। परमात्मा की भक्ति से तन और मन दोनों ही पवित्र होते है। इष्टदेव की पूजा हमारे पापकर्म को नाश करती है। निर्मल जीवन जीने की ज्योति देती है। आज की भौतिक सामग्री हमें गति तो दे सकती है, पर ज्योति तो अध्यात्म क्रिया पर ही आधारित है। प्रभु के चरण स्पर्श से मन का दुर्विचार नष्ट हो जाता है। प्रभु के भक्त प्रभु की पूजा अर्चना किये बिना जीवन को व्यर्थ समझते है।

शास्त्र में त्रिकाल पूजा विधान है—

(१) सुबह — दर्शन, स्तुति, अक्षत, धूप, दीप आदि से अग्र पूजा और वासक्षेप द्वारा अंग पूजा।

(२) मध्यान्ह पूजा — प्रक्षालन, चन्दनादि से सविस्तार अष्ट प्रकारी पूजा।

(३) सान्ध्य पूजा — आरती, भक्ति आदि।

प्रत्येक श्रावक को इस प्रकार त्रिकाल पूजा करने का विधान है। समय के अभाव में एक बार मंदिर जाकर क्रमिक तीनों पूजा कर सकते है। वर्तमान में एक ही बार में तीनों प्रकार की पूजा करने का विधान हैं। पूजा से पूर्व शुद्ध छने हुए पानी से स्नान करके शरीर शुद्धि कर लेवें।

स्नान विधि – आवश्यकतानुसार शुद्धपानी छान कर लेवें। गरम पानी में ठण्डा पानी न मिलावे। नदी, तालाब में स्नान न करें, क्योंकि इसमें सभी व्यक्ति स्नान करने के कारण पानी अशुद्ध हो जाता है। आवश्यकता होने पर बहते पानी में से पानी अलग लेकर सावधानी पूर्वक स्नान किया जा सकता है। भोजन करके तुरन्त स्नान करना निषेध है। नग्न होकर कभी स्नान न करें। यथा संभव उत्तर दिशा में या पूर्व दिशा में मुंह रखकर स्नान करें। स्नान करके अन्य वस्त्र न पहनकर सीधा पूजा का वस्त्र पहने। पूजा के लिए उत्तम सफेद धोती (उत्तरासन) का ही व्यवहार करें। पूजा वस्त्र पहनकर खाना पीना निषेध है। हर क्षेत्र में वस्त्र का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। फिर वह धार्मिक, सामाजिक, सैनिक कोई भी क्षेत्र क्यों न हो। वस्त्र से ही व्यक्ति की गरिमा का पता चलता है। परमात्मा की पूजा में शांति का प्रतीक सफेद वस्त्र को ही स्वीकार किया गया है।

पूजा वस्त्र विषयक कुछ— पूजा वस्त्र सूती या रेशमी लिया जाता है। फटा हुआ या सिलाई किया हुआ वस्त्र लेना निषेध है। पूजा करने के बाद रोज वस्त्र को पानी से धोना चाहिए। आवश्यकता होने पर साबुनादि से भी धो सकते है। पूजा वस्त्र पहनकर खाना-पीना, पेशाब करना अनुचित है। पूजा की क्रिया पूर्ण होते ही पूजा वस्त्र उतार देवें। स्त्री पूजा में तीन वस्त्र और पुरुष दो वस्त्र ही लेवें। पूजा में उद्‌भव, असभ्य, अनुचित वस्त्र न पहने। पूजा का वस्त्र अन्य वस्त्रों के साथ ना रखे और न धोवें।

यथाशक्ति सर्वोत्तम पूजा सामग्री घर से लेकर ही मंदिर जावें। स्वद्रव्य से पूजा करने पर ही मन और जीवन में पवित्रता आती है। अगर मंदिर की सामग्री से पूजा करे तो यथोचित पैसा भंडार में अवश्य डालना चाहिए। घर से पूजा के लिए तैयार होकर जाने पर स्वयं को उच्चतम लाभ तो मिलता ही है पर साथ-साथ इस प्रकार की प्रवृत्ति से अन्य देखने वाले व्यक्ति की भी भावना जागती है। कभी-कभी उन देखने वाले जीव में भी अकल्पनीय परिवर्तन आ जाता है।

एक इतिहास की घटना है पूज्य आचार्य हीर सूरिजी के समय में दिल्ली नगरी में चम्पा श्राविका के प्रभाव में आकर हिंसक बादशाह अकबर भी अहिंसा की ओर आकर्षित हुए थे। एकबार चम्पा श्राविका ने छः महीने

की कठोरतम तपस्या की थी। तपस्विनी समारोह पूर्वक श्री संघ के साथ प्रभु पूजन दर्शन के लिए जा रही थी। रास्ते में बादशाह ने इन लोगों को देखकर पूछा......वे लोग क्या करने जा रहे है। उत्तर मिला एक जैन महिला ने छः महीना तक मात्र सूर्योदय से सूर्यास्त तक गरम पानी पीकर व्रत (रोजा) किया है। उन्हें आश्चर्य हुआ और अविश्वास भी। तपस्विनी के पास बादशाह के स्वयं जाकर पूछने पर जबाव मिला देवगुरु के प्रभाव से इस प्रकार की कठोर तपस्या करने में मैं समर्थ हूँ। देव अर्थात प्रतिमा करने में मैं समर्थ हूँ। देव अर्थात प्रतिमा के प्रति बादशाह को श्रद्धा तो थी नहीं पर जीवित गुरु हीरविजय सूरिजी के नाम से प्रभावित हुए। आमन्त्रण देकर उन्हें बुलाये। इन्हीं के प्रभाव से बादशाह अहिंसक बन गये। अहिंसा धर्म का इतना ज्यादा प्रभाव उन पर पड़ा कि उन्होंने अहिंसा प्रधान **दीन इलाही** नाम के एक नये धर्म की स्थापना कर दी। दुर्भाग्य से यह धर्म बहुत दिन तक चल नहीं पाया।

निसीहि बोलकर मंदिर में प्रवेश करने के बाद बातचीत करना या संसारिक विचार करना भी अनुचित है। मंदिर या धर्मस्थान में पापकर्म का विचार या प्रवृत्ति भयानक होता है।

शास्त्र में कहा है—

अन्य स्थाने कृतं पापं, धर्म स्थाने विनश्यति।
धर्म स्थाने कृत पाप, वज्र लेपो भविष्यति।।

संसार में किया हुआ पाप-कर्म का नाश धर्म स्थान में आकर आराधना उपासना प्रायश्चित से नाश किया जाता है। पर धर्म स्थान में आकर अगर पाप करें तो उसे नाश करने का संसार में कोई स्थान नहीं है यानि वे कर्म निकाचित वज्रलेप जैसा होता है।

इसलिये परमात्मा के मंदिर में पापी का विचार भी करना अनुचित है कर्म की बात तो सोच भी नहीं सकते है। प्रभु की पूजा के लिए चन्दन, केशर, ब्रास घिसते समय मुँह में मुंहकोश अवश्य बाँधना चाहिए। अपने उत्तरीय के एक भाग को आठ पड़ बनाकर मुख पर बांधना चाहिए।

पूजा करते समय हमारी अशुद्ध प्राणवायु प्रभु पर न पड़े तथा थूकादि पड़ने की संभावना से मुखकोश बाँधना एकान्त आवश्यक है। पूजा करते

समय प्रत्येक वस्तु देखकर, प्रमार्जन कर लेवें। क्यों कि हमारी थोड़ी असावधानी किसी जीव के लिये घातक भी हो सकती है। अर्थात पूजा करते समय हिंसा न हो इस बात का ध्यान रखना चाहिये।

स्वयं अपने कपाल में तिलक करने के लिये अलग से केशर ब्रास युक्त चन्दन तैयार कर लेवें।

परमात्मा की आज्ञा स्वीकार कर रही हूँ प्रभु आपकी आज्ञा ही मेरे लिए सर्वोपरि है इस भावना से कपाल के मध्यभाग में पुरुष दीपक शिखा जैसा और महिला गोल तिलक करें। पूजा पूर्ण होने पर तिलक मिट न जावे इस बात का ध्यान रखे। इस तिलक से अनेक लाभ होते है मन शांत रहता है। गलत विचार नहीं आते है। सहधर्मी के साथ स्नेहपूर्ण सम्बन्ध बढ़ता है। इस तिलक की महिमा अपार है। तिलक के विशेष विधान में ललाट, दोनो कान, कण्ठ, हृदय और नाभी में भी तिलक करने का विधान है।

इतिहास में ऐसे-ऐसे प्रमाण मिलते है कि तिलक के लिए शासन प्रेमी अपने जीवन की आहुति दे दिये।

पाटन (गुजरात) का राजा परमार्हत् कुमारपाल की कीर्ति को समाप्त करने के लिए उनके विरोधी अजयपाल राजा ने सभी प्रजा को आदेश दिया कि कोई भी व्यक्ति केशर चन्दन का पीला तिलक लगायेगा वह देशद्रोही कहलायेगा और उसे उचित दण्ड दिया जायेगा। राज्यादेश प्रसारित होने के बाद भी मन्त्रीश्वर कपर्दी तिलक करके ही राजसभा में आये थे। इसको देखकर राजा अजयपाल अधिक क्रोधित हो गया। तुरन्त नया आदेश प्रसारित कराया......... (१) केशरिया तिलक त्याग करे, या (२) राज्य त्याग करें या (३) गरम तेल में स्वयं को आहुति दे।

रात्रि को मन्त्रीवर कपर्दी की अध्यक्षता में श्री संघ की एक सभा बुलाई गयी। इसमें सर्वानुमति से निर्णय लिया गया हम न तिलक मिटायेंगें, न राज्य त्याग करेंगे पर सामूहिक रूप में सपत्निक आहुति देगें। दूसरे दिन सम्पूर्ण पाटन के शासन प्रेमी नवयुवा सपत्नी शासन रक्षा के लिए आहुति देने को नाच उठें। सभी प्रभु की पूजा करके जीवन का अन्तिम तिलक करके राज्यसभा की ओर भगवान की जय-जयकार करते हुए सामूहिक रूप में आगे बढ़े। नगर में हाहाकार मच गया। हरक्षण उत्सुक और आश्चर्य

से भरा था। सभी शासन प्रेमी निश्चय कर चुके थे, तिलक मात्र तिलक के लिये स्वयं को आहुति देना हैं और धर्म विरोधी शासक को शिक्षा देना है। योजनानुसार एक के बाद एक भगवान वीतराग की जय हो, जैनत्व का प्रतीक तिलक अमर हो, इस प्रकार १९ दम्पति तिलक रक्षा के लिए आहुति दे दिये। इस करुणदृश्य को देखकर पत्थर दिल राजा अजयपाल का हृदय भी पिघल गया। हार स्वीकार किये। अपना आदेश वापस ले लिये। ये है तिलक की गौरव महिमा गाथा। पूजा सामग्री लेकर मंदिर में प्रवेश करें। प्रवेश करते समय प्रथम निसीहि बोलकर संसार सम्बन्धी सभी बाते भूलकर मंदिर विषयक चिन्तन करें। परमात्मा का दर्शन होते ही अंजलीबन्द प्रणाम कर **णमो जिणाणं** बोले। पूजा सामग्री योग्य स्थान पर रखकर सर्वप्रथम तीन प्रदक्षिणा देवें। प्रदक्षिणा ध्यान केन्द्रित करने का एक तान्त्रिक विधान है। किसी भी पदार्थ को जब हम बारंबार प्रदक्षिणा देते है, तब उस पदार्थ के साथ एक अपनत्व भाव जागृत होता है। सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र प्राप्ति की कामना से मंदिर में तीन बार प्रदक्षिणा देने की व्यवस्था न हो तो सिंहासन में भगवान (पंचतीर्थ धातुमूर्ति) रखकर प्रदक्षिणा दे सकते है। प्रदक्षिणा इस प्रकार देवे कि अन्य व्यक्ति की क्रिया में बाधा न पड़े। प्रदक्षिणा देते समय निम्नोक्त दोहा बोले—

प्रदक्षिणा का दोहा—

काल अनादि अनन्त से, भव भ्रमण का नहीं पार ।
वे भ्रमण दूर करने को, प्रदक्षिणा हो तीन बार ।। १।।
प्रदक्षिणा देते-देते, भव भ्रमण दूर हो जाय ।
दर्शन ज्ञान चारित्ररूप, प्रदक्षिणा सुखदाय ।। २।।
दर्शनज्ञान चारित्र ने, रत्नत्रयी मोक्ष आधार ।
तीन प्रदक्षिणा इस कारण, भव दुःख भंजन हार ।।३।।

परम तारक परमात्मा को तीन प्रदक्षिणा देने के बाद परमात्मा के सन्मुख पुरुष स्वयं के बाये अर्थात भगवान के दाहिने व महिला स्वयं के दाये अर्थात भगवान के बायी ओर खड़ी होकर स्तुति करें। स्तुति से पूर्व अर्धावनत (दो हाथ जोड़कर शरीर को आधा से अधिक झुकाकर) मुद्रा में प्रणाम करें। अपनी स्तुति करते समय अन्य किसी को बाधा न हो इस बात

का पूरा ध्यान रखें। अपनी इच्छानुसार पूर्व रचित या स्व रचित स्तुति से भगवान की स्तुति कर सकते है।

प्रभु के सम्मुख बोलने की स्तुति—

हे प्रभु! आनन्ददाता, ज्ञान हमको दीजिये,
शीघ्र सारे दुर्गुणों को, दूर हमसे कीजिए।
लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बने,
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बने ।।१।।
दया सिन्धु, दया सिन्धु, दया करना, दया करना,
मुझे इन बन्धनों से, अब जल्दी मुक्त करना।
नहीं ये ताप सह पाता हूं, जलती कर्मों की ज्वाला,
बरसा के प्रेमी की धारा, हृदय की आग बुझा देना ।।२।।

उपरोक्त स्तुति के अतिरिक्त अपनी इच्छानुसार अन्य स्तुति भी कर सकते है। इसके बाद परमात्मा की अंग पूजा करने के लिये मुखकोश बाँधकर मूल गभारा (मुख्य गर्भ गृह) में द्वितीय बार निसीहि बोलकर प्रवेश करें। प्रथम निसीहि बोलकर जैसे सांसारिक व्यापार को त्याग किये थे अब दूसरी बार निसीहि बोलकर मंदिर सम्बन्धी अन्य विचार से भी मुक्त हो जावे। मंदिर निरीक्षण करते समय अगर कोई अव्यवस्था दिखे तो सम्बन्धित व्यक्ति को मौखिक अथवा लिखित सूचना करें। सामान्य बात हो तो स्वयं ही दूर करने का प्रयत्न करें। हमेशा याद रखना चाहिए कि मंदिर हमारी अध्यात्म सम्पत्ति है।

अष्ट प्रकारी पूजा का क्रमिक नाम— (१) जल पूजा (२) चन्दन पूजा (३) पुष्प पूजा (४) धूप पूजा (५) दीपक पूजा (६) अक्षत पूजा (७) नैवेद्य पूजा (८) फल पूजा।

सभी प्रकार की पूजा सामग्री उत्कृष्ट प्रकार की ही ग्रहण करें।

विधिरूप में पूजा तीन प्रकार—

(१) अंग पूजा— जिस पूजा में परमात्मा के अंगों के साथ द्रव्य का स्पर्श होता है। या हम स्वयं भगवान के अंग स्पर्श करके जो पूजा करते हैं, उसे अंग पूजा कहते है। जैसे—जल पूजा, चंदन पूजा, पुष्प पूजा, वासक्षेप पूजा, आभूषण पूजा, वस्त्र पूजा, विलेपन पूजा आदि। अंग पूजा से विघ्न और शत्रुभय नाश होता है।

(२) अग्र पूजा— परमात्मा के सम्मुख जो पूजा की जाती है, वे अग्र पूजा है। जैसे—धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल चामर, पंखा, दर्पण आदि अग्र पूजा से इच्छापूर्ण होती है।

(३) भाव पूजा— परमात्मा के सम्मुख किसी भी प्रकार की सामग्री बिना मात्र मन से जो क्रिया होती है उसे भाव पूजा कहते है। जैसे- चैत्य वंदन, ध्यान, जाप, भजन आदि।

भाव पूजा से सम्यक्त्व की शुद्धि होती है और यह पूजा मोक्षदायिनी है।

इस पूजा को दो भाग में भी विभाजित किया जा सकता है। (१) द्रव्य पूजा (२) भाव पूजा

(१) जल पूजा- युद्ध के मैदान में जरासंघ ने जरा विद्या से जब श्रीकृष्ण की सेना को वृद्धवत् शक्तिहीन बना दिया और श्रीकृष्ण संकट में पड़ गये। कोई उपाय नजर नहीं आ रहा था। इस युद्ध में श्री नेमिकुमार (२२वें तीर्थंकर) भी साथ थे। श्रीकृष्ण को हारने की स्थिति में उदास देखकर उन्होंने महाप्रभाविक प्रभु पार्श्वनाथ की जल पूजा करके सेना ऊपर छिड़कने का निर्देश दिया।

तीन दिन तक नेम कुमार युद्ध मोर्चा सम्भाले रहे और श्रीकृष्ण ने अट्ठम करके प्रक्षलन (हवण) जल से जरामन्त्र प्रभावित सेना को मुक्त किया।

(२) इस प्रकार हवण जल से ही मेना सुन्दरी ने अपने पति श्रीपाल कुमार सहित ७०० कुष्ठरोगी को रोग से मुक्त किया।

(३) आगम नवांग टीकाकार आचार्य श्री अभयदेव सूरि प्रक्षालन पानी से ही कुष्ठरोग मुक्त हुये थे।

(४) आज भी अनेकानेक उदाहरण है जिसमें इस प्रकार की विधि से शारीरिक रोग और विघ्न को दूर किया गया है।

प्रभु के जन्म समय में ६४ इन्द्र मिलकर मेरुपर्वत पर जाते है। शकेन्द्र पाँच रूप बनाकर माता के पास से दैविक शक्ति से ऐसा ही प्रतिरूप बालक माता के पास रखकर नवजात शिशु को लेकर मेरुपर्वत जाते है। मेरुपर्वत पर पाण्डुशिला के ऊपर सभी मिलकर हर्षोल्लास पूर्वक प्रभु का अभिषेक करते है। प्रभु का अभिषेक रत्न, सुवर्ण, रोप्य, रत्न सुवर्ण,

रत्नरोप्य, सुवर्णरोप्य, रत्नसुवर्ण रोप्य, और माटी इस प्रकार आठ प्रकार के सभी आठ-आठ हजार कलश से २५० बार प्रभु का अभिषेक करते है।

कुल एक करोड़ साठ लाख बार अभिषेक करते है। देवताओं ने जिस प्रकार भक्ति भाव पूर्वक परमात्मा का अभिषेक किया था। वैसा ही भक्ति भाव पूर्वक हमें भी अभिषेक करना चाहिए।

पंचतीर्थ भगवान (प्रतिभागी) और सिद्धचक्र एक अलग थाली में लेकर भी अष्ट प्रकारी पूजा की जा सकती है। सर्वप्रथम च्यवन कल्याणक की भावना से प्रभुजी की प्रतिमा से आभूषण, फूल व अन्य आंगी आदि उतारें। वे सब करने से पूर्व जीवों की विराधना न हो इसलिए मोर पीछे से सावधानी पूर्वक प्रमार्जन कर लेवें।

इसके बाद एक टुकड़ा वस्त्र पानी में भिगोकर धीरे-धीरे प्रतिमा में लगा हुआ चन्दनादि साफ कर लेवें। इस वस्त्र से अगर केशर, चन्दनादि पूर्णरूप से न निकले तो खश कुंची से धीरे-धीरे निकाल लेवें। खश कुंची को भगवान के शरीर के उपर कोई बर्तन साफ करने जैसा प्रयोग न करें। जैसे अपने दाँत में लगे अन्न को निकालने के लिए सलीका का व्यवहार करते है वैसा ही भगवान के शरीर पर खश कुंची का व्यवहार करें। प्रभु के अभिषेक के लिए कुएं से शुद्ध जल छानकर लावें। शुद्ध भाव से उल्लास पूर्वक अभिषेक करने से पूर्व सभी सामग्री तैयार कर लेवें। जल, दूध, दही, घी, मिसरी, चन्दन। बरास, दही और मिसरी के स्थान पर चन्दन, ब्रास दिया जाता है। मिलाकर पंचामृत तैयार कर लेवें।

विनय पूर्वक दो हाथ में नलीयुक्त कलश को पकड़कर निम्नोक्त दोहा बोलकर जल द्वारा अभिषेक करें।

नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः

जलपूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश।

जलपूजा फल मुझ हो जो, मांगो प्रभु पास।।

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहाः।

यहाँ तक बोलकर सभी व्यक्ति क्रमिक पुरुष प्रतिमा के दाहिने ओर से और महिला बाये ओर से अभिषेक करें। अभिषेक मस्तक से प्रारम्भ करें।

अर्थ– हे प्रभु! आज मैं इस प्रकार जल से आपको स्नान कराऊँ कि स्नान तो आपको करा रहा हूँ, पर अनन्त कालीन कर्मरूपी मैंल मेरा नष्ट हो। अर्थात प्रभु हमें ऐसी सद्‌बुद्धि दे कि मैं मेरा जीवन निर्मल पवित्र बना सकूं। परमात्मा का प्रक्षालन करते समय स्वयं को अतिधन्य समझे।

फिर पंचामृत से निम्नोक्त दोहा बोलकर अभिषेक करें।

पंचामृत से अभिषेक करते समय बोलने का पद——

मेरु शिखरे नवरावे हो सूरपति,
मेरू शिखरे नवरावे।
जन्म काल जिनवर जी को आणी।
पंचरूप करी आवे हो.........सूरपति.........
रत्न प्रमुख अडजाति का कलशा,
औषधचूर्ण मिलावे, हो सूरपति........
खीर समुद्र तीर्थोदक आणी,
स्नान करी गुण गावे हो सूरपति.......
एणी परे जिन प्रतिमा को न्हवण करी,
बोधिबीज मानुं पावे हो सूरपति.........
अनुक्रम में गुण रत्नाकर फरसी,
जिन उत्तम पद पावे हो......सूरपति.........।

दो हाथ में कलश पकड़कर प्रक्षालन करें। कलश प्रतिमा को स्पर्श न करावें। पंचामृत से अभिषेक के बाद शुद्धजल से कलश भरकर निम्नलिखित दोहा बोलकर प्रक्षालन करें।

ज्ञान कलश भरी आतमा,
समता रस भरपूर।
श्री जिनने नवरावतां,
कर्म पाप चकचूर।।

पानी से प्रतिमा को स्वच्छ करके सफेद मुलायम तीन वस्त्रखंड अंगलुछना से क्रमिक तीनबार एक भी बूंद पानी न रहे इस प्रकार साफ करें। प्रतिमा को पोछने से पूर्व एक अन्य मोटा वस्त्र से प्रभासन (सिंहासन) को अच्छी तरह साफ कर लेवें। प्रतिमा का कोई भाग पानी वाले कपड़े से

यदि साफ न होता हो तो ताँबे की सलिका के सहारे कपड़ा द्वारा साफ कर लेवें। लोहे की प्रतिमा को स्पर्श करना निषेध है। अंगलुछना आदि पूजा की सामग्री कभी जमीन पर न रख कर कोई पात्र में ही रखें। कोई भी पूजा सामग्री धूप देकर शुद्ध करके ही काम में लेवें। अंगलुछना हो जाने के बाद जब तक चन्दन पूजा प्रारंभ न हो तब तक एक अंगलुछना प्रतिमा को गोद में रख देवें।

(२) चन्दन पूजा— प्रक्षालन, अंगलुछना करने के बाद या पूर्व अपनी सुविधानुसार स्वयं के तिलक के केशर-बरास युक्त चन्दन अलग से तैयार कर लेवे। पूजा के लिए बरास और केशर युक्त चन्दन अलग-अलग तैयार करें।

सर्वप्रथम स्वयं तिलक करके एक थाली में बरास-चन्दन, पुष्प लेकर मूल गभारे में पहुँचे। प्रथम बरास की कटोरी हाथ में लेकर निम्नोक्त दोहा बोलकर प्रभु अंग में विलेपन करें।

नमोर्हत्.........................

शितलगुण जिसमें है, शीतल प्रभु मुख अंग।

आतम शीतल करने चलो, पूजो अरिहा अंग।।

ॐ ह्रीं .... चन्दनं यजामहे स्वाहा ।

यह मंत्र बोलकर पाँचो अंगुली में बरास लेकर प्रभु के सम्पूर्ण अंग में विलेपन करें। विलेपन करते समय एक बात का ध्यान रखे कि अपना नख प्रतिमा में स्पर्श न हो। बाद में चन्दन की कटोरी हाथ में लेकर अनामिका से पूजा करना पवित्रता की एक विशिष्ट क्रिया है। इस अंगुली में तरंगो को ग्रहण करने की अद्‌भुत शक्ति है। इसके द्वारा प्रभु की अध्यात्म तरंग या शुद्धता हमारे मस्तिष्क तक पहुँचती है। परम शांति की अनुभूति होती है। नव अंग की पूजा में तेरह स्थान पर चंदन की टीका करनी होती है। चन्दन पूजा करते समय प्रभु के नख न स्पर्श हो इस बात का ध्यान रखें।

नव अंग—

(१) अंगूठा	(दाहिना, वाँया)
(२) घुटना	(,, ,,)
(३) कब्जी हाथ	(,, ,,)

(४) खभा (स्कंध) („ „)

(५) मस्तक (६) ललाट (७) कण्ठ (८) हृदय (नाभी)।

(१) अगूंठा (चरण)–(प्रथम दाया फिर बाँया)

जल भरी संपूट प्रत्र मां, युगलिक नर पूजंत।

ऋषभ चरण अगूंठडे, दायक भव जल अंत।।

(२) घुटना– (प्रथमा दाया फिर बाँया)

जानुबले का उस्सग्ग रहया, विचर्या देश विदेश।

खड़ा-खड़ा केवल लहयुं, पूजो जानु नरेश ।।

(३) कलाई–(कब्जी) (दाया फिर बाँया)

लोकान्तिक वचने करी, वरस्या वरसीदान।

कर कांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहूमान।।

(४) खंभा (स्कन्ध) (दाया फिर बाँया)

मान गयुंदोय अंश थी, देखी वीर्य अनन्त।

भुजा बले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त।।

(५) सिर शिखा– (मस्तक)–

सिद्ध शिला गुण उजली, लोकान्ते भगवन्त।

वसिया तिण कारण भवि, सिर शिखा पूजंत।।

(६) कपाल (भाल)–

तीर्थंकर पद पुण्य से, त्रिभुवन जन सेवन्त।

त्रिभुवन तिलक सभा प्रभु, भाल तिलक जयवंत।।

(७) कण्ठ

सोलह प्रहर प्रभु देशना, कंड विवर वर्तुल।

मधुर ध्वनी सुरनर सुने, तीन गले तिलक अमूल ।।

(८) हृदय–

हृदय कमल उपशम बले, बाल्या रागने द्वेष।

हिम दहे वन खंडने, हृदय तिलक विश्राम।

ये नव अंग की पूजा करने के बाद हाथ जोड़कर निम्नोक्त दोहा बोले।

उपदेशक नव तत्वना, निणे नव अंग जिणन्द।

पूजो बहुबिध भावशुं, कहौ शुभवीर मुनींद।।

परमात्मा केवल ज्ञान प्राप्त करने के बाद नवतत्त्व का उपदेश दिये थे इसलिये परमात्मा के नव अंग में पूजा किया जाता है। नवतत्त्व इस प्रकार है—जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध और मोक्ष।

सर्व प्रथम सभी पूजा विधान मूल नायक (मुख्य) भगवान से ही प्रारम्भ करें। अगर किसी कारण से मुलनायक की पूजा होना बाकी हो तो, अन्य भगवान की प्रक्षालन पूजा हो चुकी हो उसकी पूजा करके जा सकते है। या तब तक मूलनायक की पूजा प्रारंभ हो गई हो तो अलग से चन्दन लेकर उनकी पूजा कर सकते हैं। प्रक्षालन से पूर्व वासक्षेप द्वारा प्रभुकी सब अंग पूजा की जा सकती है। पूजा करने के बाद हाथ-नख में चन्दन न रह जाय इसका ध्यान रखें।

प्रभु की पूजा करने के बाद नवपद–सिद्ध चक्र मन्त्र की पूजा करें।

सिद्ध-चक्र की पूजा विधि–

(१) अरिहंत (२) सिद्ध (३) आचार्य (४) उपाध्याय (५) साधु (६) दर्शन (७) ज्ञान (८) चारित्र (९) तप।

इसके बाद गौतम स्वामी, सुधर्मा स्वामी गुरुमूर्ति आदि की पूजा करें। अन्तिम देव-देवी की पूजा अंगूठा से मस्तकपर तिलक करके करें। देव-देवी की पूजा करने के बाद उस चन्दन से भगवान की पूजा निषेध है।

क्रमशः

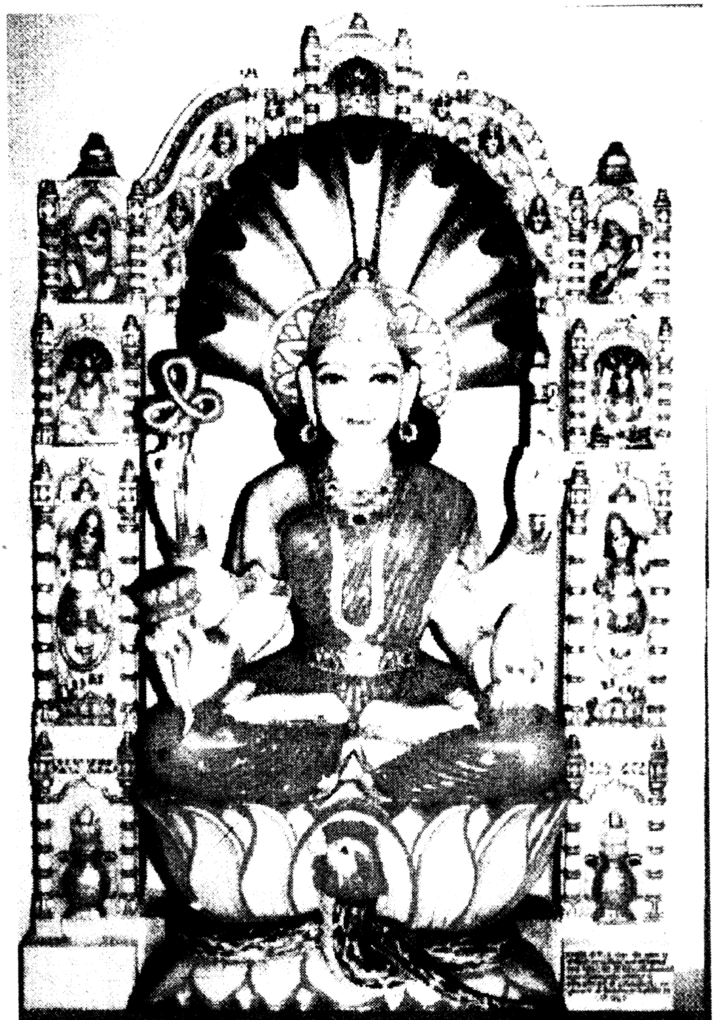

MAA PADMAWATI
(MAHABALIPURAM, DELHI)

चित्र परिचय

दिल्ली में **महाबलीपुरम्**

माँ पद्मावती की यह भव्य प्रतिमा भारत की राजधानी दिल्ली के दक्षिण भाग के ऐतिहासिक मैहरोली क्षेत्रान्तर्गत गांव भाटी के **श्री पार्श्व पद्मावती जिनालय, महाबलीपुरम्** में स्थित है। शान्त सुरम्य स्थल में अवस्थित एवं जैन वास्तु व शिल्प शास्त्रानुरूप श्वेत धवल संगमरमर से निर्मित इस भव्य कलापूर्ण जिन प्रासाद के प्रथम तल पर वीतराग भाव युक्त परमात्मा पार्श्वनाथ की श्यामवर्णी पाषाण प्रतिमा श्वेत धवल परिकर में विराजमान की गयी है। परमात्मा पार्श्वनाथ की उपसर्गहारिणी देवी माँ पद्मावती की ५१ इन्च की परिकर युक्त प्रतिमा का विश्व में संभवतः यह प्रथम मन्दिर है, जिसमें माँ पद्मासन मुद्रा में स-वस्त्र (प्रतिमा में पूर्ण वस्त्र उत्कीर्ण है) दृष्टिगोचर होती है। **महाबलीपुरम्** में विराजित परमात्मा पार्श्वनाथ तथा मनोकामनापूर्णी माँ पद्मावती की प्रतिमायें भव्य तथा चमत्कारी हैं, जिसका आभास एवं अनुभव अनेक भक्तजनों को समय समय पर हुआ है। इस पावन स्थल में पूजा अर्चना तथा साधना कर दर्शनार्थी का मन श्रद्धा भाव से परिपूर्ण हो जाता है।

१,०८,००० वर्ग फुट के भूखण्ड में स्थापित इस मन्दिर का शिलान्यास परमात्मा महावीर के २६००वें जन्म कल्याणक वर्ष में २७ मई, २००१ को पूज्य गणिवर्य श्री मणिप्रभसागर जी म. सा. एवं इसकी पावन प्रतिष्ठा परमात्मा महावीर के २६०१ वें जन्म कल्याणक दिवस चैत्र सुदि-१३ दिनांक-२५ अप्रैल, २००२ को परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री सुशील सूरीश्वर जी की पावन निश्रा में व तीन-तीन आचार्यों व तीन-तीन गच्छ के साधु-साध्वी जी की ४६ ठाणा सहित दिल्ली के सभी प्रमुख जैन संघ व गणमान्य संघ व गणमान्य संघ प्रमुखों व जिन शासनप्रेमी चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आनन्द उत्सव से सम्पन्न हुई। एक परिवार (श्रेष्ठिवर्य श्री हरख चन्द नाहटा परिवार) द्वारा भूखण्ड से लेकर निर्माण एवं प्रतिष्ठा महोत्सव तक पूर्ण कार्य सम्पन्न कराना एक अनुकरणीय व अनुमोदनीय कार्य है। यात्रियों व दर्शनार्थियों की सुविधा हेतु अन्य निर्माण कार्य अनवरत रूप से चल रहा है।

परमात्मा पार्श्व व धरणेन्द्र-पद्मावती

प्रस्तुतिः ललित कुमार नाहटा

पवित्र नदी गंगा किनारे बसे वाराणसी नगर के राजा अश्वसेन की पटरानी वामादेवी की कुक्षी से पोष कृष्णा १० की अर्द्धरात्रि को पुत्र उत्पन्न हुआ। नाम रखा गया कुमार पार्श्व। पार्श्व कुमार शुक्ल पक्ष के चंद्रमा के समान बढ़ते-बढ़ते यौवनावस्था में पहुँचे। ऊँची काया, नीलोत्पल वर्ण लिए पार्श्व कुमार का अद्भुत आलौकिक रूप भव्य अत्याकर्षण लिये था।

एक दिन राजकुमार पार्श्व ने अपने भवन के झरोखे से नर-नारियों के झुण्ड को हाथों में पत्र-पुष्प फलादि लेकर जाते देखा। सेवक से उन्होंने जाना कि कमठ नाम का तपस्वी पंचाग्नि तप कर रहा है। उसी की पूजा वन्दना करने नगर के नागरिक जन उस ओर उमड़ रहे हैं।

राजकुमार भी कौतूहलवश सेवकों सहित नदी किनारे के उस उद्यान में पहुँचे। वहाँ कमठ को अपने चारों ओर अग्नि जला प्रचण्ड सूर्य की धूप में ताप सहन करते देखा। पार्श्व कुमार ने अपने अवधिज्ञान से तप में हिंसा को जान कमठ को सम्बोधित कर विस्तृत रूप में समझाते हुए कहा-**हिंसायुक्त क्रिया धर्म नहीं हो सकती।** कुमार के सम्बोधन से कमठ क्रोध से भड़क उठा व बोला–**तुम्हारा कार्य राज-काज का है, तुम धर्म के मर्म को क्या समझो? ये कार्य हम धर्मगुरुओं का है। तुम्हें हिंसा इसमें दिखाई देती है तो प्रमाणित करो।** तत्काल राजकुमार ने अपने सेवकों द्वारा अग्निकाण्ड में से एक काष्ठ (लकड़ी) की तरफ इंगित कर उसे बाहर निकालवाया व निकट की नदी के जल से उस काष्ठ की आग को बुझा कर सावधानी पूर्वक चिराया। *लकड़ी चीरते ही उसमें से एक नाग (कहीं-कहीं एक नाग युगल का* उल्लेख भी आता है) को अधजली अवस्था में निकाला। पार्श्वकुमार ने नाग को नमस्कार मन्त्र सुनाया। नमस्कार मन्त्र सुनने के प्रभाव से नाग आर्तरौद्र ध्यान से बच गया व धर्मध्यान युक्त शरीर त्याग भुवनपति लोक के नागकुमार जाति के इन्द्र **धरणेन्द्र** के रूप में उत्पन्न हुआ।

उधर उपस्थित जन समूह के मध्य अज्ञानी साबित होने से कमठ क्रोध की ज्वाला में शेष जीवन व्यतीत कर मर कर भवनवासी देवों के मेघकुमार निकाय में **मेघमाली** के रूप में उत्पन्न हुआ।

पार्श्वकुमार ने अपनी पत्नी राजकुमारी प्रभावती के साथ अनासक्त भोग-जीवन व्यतीत करने के उपरान्त प्रव्रज्या ग्रहण की (दिगम्बर आम्नाय भगवान पार्श्वनाथ को अविवाहित मानती है)। मुनि पार्श्व कुमार विहार करते-करते **अहिच्छत्रा** नगर में पहुँचे। वहाँ एक तापस के आश्रम के निकट उद्यान में वट वक्ष के नीचे ध्यानस्थ खड़े हुए। वहाँ से आकाश मार्ग से गुजरते हुए कमठ तापस के जीव मेघमाली ने अपने पूर्व भव के शत्रु पार्श्वकुमार को वहां ध्यानस्थ खड़े देखा। मेघमाली प्रतिशोध की भावना से भड़क उठा। उसने अपनी माया से सिंहों, हाथियों, भालुओं, चीतों, बिच्छुओं, सर्पों, विकराल बेतालों के भयंकर रूपों से उपद्रव किया। जब शान्त समाधि को तोड़ने में निरंतर असफल रहा तो अति भयंकर क्रोध में आकर मेघगर्जना व कड़कती बिजलियों से प्रलयंकारी मूसलाधार वर्षा करने लगा। पार्श्व मुनि पर तीक्ष्ण भाला, बरछी और कुदाल जैसा दुखदायक असह्य प्रहार उस मेघ धारों का होने लगा। सिंह, हाथी जैसे बलिष्ठ पशु भी उस मुसलाधार वर्षा से इधर-उधर भागते अपने बचाव की निष्फल चेष्टा करते जल प्रवाह में बहने लगे। बड़े-बड़े विशालकाय वृक्ष उखड़ने लगे। घोर अन्धकार व चीत्कार से वातावरण भयावह बन गया लेकिन पार्श्वमुनि धीर-गम्भीर, अडिग, निर्भीक व शान्त मुद्रा में ध्यानस्थ खड़े रहे। पानी घुटने, जांघ, कमर, छाती व गले से बढ़ता नासिका के अग्रभाग तक पहुँच गया। लेकिन पार्श्व मुनि का ध्यान अडिग रहा। उनकी चेतना देहातीत होकर आत्मध्यान में केन्द्रित हो गयी थी।

उधर धरणेन्द्र का आसन प्रभु पर उपसर्ग के कारण जब कंपायमान हुआ तो अवधि ज्ञान से अपने उपकारी पार्श्वकुमार पर मेघमाली (पूर्व भव का कमठ तापस) द्वारा उपद्रव करते देखा। इन्द्र धरणेन्द्र तुरन्त अपनी इन्द्राणी पद्मावती सहित वहाँ उपस्थित हुआ। धरणेन्द्र देव व पद्मावती देवी ने वन्दन कर अपनी वैक्रिय लब्धि से लम्बी नाल का कमल बन प्रभु के चरणों के नीचे आ उन्हें ऊपर उठा लिया व सप्त फण से प्रभु के शरीर को छत्र के समान आच्छादित कर परिषह मुक्त किया।

धरणेन्द्र ने मेघमाली को सम्बोधित कर कहा–"अरे अधम! तुझे कुछ भान भी है? ओ अज्ञानी! इस घोर पाप से तू अपना ही विनाश कर रहा है। तेरी बुद्धि इतनी कुटिल क्यों हो गई हैं? इन विश्वपूज्य महात्मा का अहित करके तू किस सुख की चाहना कर रहा है? मैं इन महान दयालु पुण्यशाली आत्मा का शिष्य हूँ। अब मैं तेरी अधमता सहन नहीं कर सकूँगा। मैं समझ गया, तू इन महात्मा से अपने पूर्वभव का वैर ले रहा है। अरे मूर्ख! इन्होंने तो अनुकम्पा वश होकर सर्प को (मुझे) बचाया था और तेरा अज्ञान दूर करके सन्मार्ग पर लाने के लिए हितोपदेश दिया था। परन्तु तू कुपात्र था। तेरी कषायाग्नि भभकी और अब क्रूर बन कर तू उपद्रव कर रहा है। रे मेघमाली! रोक अपनी क्रूरता को, अन्यथा अपनी अधमता का फल भोगने के लिये तैयार हो जा।"

धरणेन्द्र की गर्जना सुन मेघमाली ने नीचे देखा। नागेन्द्र को देखते ही उसे आश्चर्य के साथ भय हुआ। उसने देखा कि जिस संत को मैं अपना शत्रु समझ कर उपद्रव कर रहा हूँ, उस महात्मा की सेवा में धरणेन्द्र स्वयं उपस्थित है। मेरी शक्ति ही कितनी जो मैं धरणेन्द्र की अवज्ञा करूँ? और यह महात्मा कोई साधारण मनुष्य नहीं है। साधारण मनुष्य की सेवा में धरणेन्द्र नहीं आते । यह महात्मा किसी महाशक्ति की धारक अलौकिक विभूति है। मेरे द्वारा किये हुए भयानकतम उपद्रवों ने इस महापुरुष को किंचित् भी विचलित नहीं किया। यह महात्मा तो अनन्त शक्ति का भण्डार लगता है। यदि क्रुद्ध होकर यह मेरी ओर देख भी लेता, तो मेरा अस्तित्व ही नहीं रहता।

हाँ, मैं अज्ञानी ही हूँ। मैंने महापाप किया है। मैं इस परमपूज्य महात्मा की शरण में जाऊँ और क्षमा माँगू। इसी में मेरा हित है,

अपनी माया को समेट कर वह प्रभु के समीप आया और नमस्कार करके बोला–

भगवन! मैं पापी हूँ। मैंने आपकी हितशिक्षा को नहीं समझा। मुझ पापात्मा पर आपकी अमृतमय वाणी का विपरीत परिणमन हुआ और मैं वैर लेने के लिये महाक्रूर बन गया। प्रभो! आप तो पवित्रात्मा हैं। आप के हृदय में क्रोध का लेश भी नहीं है। हे क्षमा के सागर! मुझ

अधम को क्षमा कर दीजिये। वास्तव में मैं न तो मुँह दिखाने योग्य हूँ और न क्षमा का पात्र हूँ। परन्तु प्रभो! मैं आपकी शरण आया हूं। शरणागत पर कृपा तो आपको करनी ही होगी।

इस प्रकार बार-बार क्षमा माँगते हुए मेघमाली ने प्रभु की वन्दना की और धरणेन्द्र से क्षमा याचना कर स्व स्थान चला गया। उपसर्ग मिटने पर धरणेन्द्र भी प्रभु की वन्दना करके स्व स्थान चले गये। इस प्रकार धरणेन्द्र व पद्मावती ने प्रभु के उपसर्ग को मिटाया। तब से प्रभु पार्श्वनाथ के साथ उपसर्गहारिणी माँ पद्मावती तथा धरणेन्द्र देव की पूजा-अर्चना बड़ी श्रद्धा तथा विश्वास से दुनिया भर में विशेष कर भारत के कोने-कोने में की जाती है।

मैंने अपने अनुभवों के आधार पर महाबलीपुरम् प्रतिष्ठा महोत्सव (दिनांक २५-०४-२००२) की धर्म सभा में कहा कि माँ भक्तों के कष्ट हरने वाली, प्रत्यक्ष प्रगट प्रभावी तथा वांछापूर्णी हैं, जिसमें लक्ष्मी सरस्वती तथा दुर्गा का रूप समाहित है। अर्थात धन बुद्धि व शक्ति दायिनी हैं। जो भक्त पूर्ण श्रद्धा, विश्वास तथा सम्यक् भाव से माँ की आराधना करते हैं, उनके सभी सात्विक मनोरथ अवश्यमेव सिद्ध होते हैं। परम कृपालु देव परमात्मा पार्श्व व उन्हीं की उपसर्गहारिणी, आशापूर्ण माँ पद्मावती की ५१ मनोहारी प्रतिमा महाबलीपुरम् ग्राम भाटी, मेहरौली क्षेत्र, दिल्ली में हमारे परिवार (श्रेष्ठिवर्य श्री हरखचन्द नाहटा परिवार) द्वारा परमात्मा महावीर के २६०१ वें जन्म कल्याणक दिवस पर प्रतिष्ठित करवायी गयी है। भारत की राजधानी दिल्ली महानगरी के सुदूर दक्षिण क्षेत्र मैहरोली के गांव भाटी में महानगर के कोलाहल से दूर शांत, सुरम्य एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न नयनाभिराम महाबलीपुरम् तीर्थ ध्यान साधना, आराधना, पूजा अर्चना व भाव भक्ति के लिये पावन स्थल है।

-----✹-----

पद्म कुमार चरित्र

एक समय नागरिक लोगों के प्रबल पुण्योदय से आचार्य ज्ञानसमुद्रसूरि अपने पाँच सौ शिष्यों के साथ पोलासपुर के उद्यान में पधारे। वनपाल ने बधाई दी, राजा ने पुष्कल द्रव्य दिया तथा राज प्रजा सूरि जी को वन्दनार्थ गये और सूरिजी ने आये हुए लोगों को अपनी ओजस्वी वाणी से धर्मदेशना दी जिसमें कहा कि हे भव्यों! इस असार संसार में मिथ्यावाद कारणों से जीव अनादि काल से ऊँच नीच गति जाति में परिभ्रमण करता आया है हां! इस समय आप लोगों को अच्छी सामग्री मिली है जिसका सदुपयोग कर धर्म की आराधना करनी चाहिए इत्यादि देशना दी। जिसको यों तो सब लोगों ने सुना पर विशेष रूप से राजा पृथुसेन और उनकी रानी चम्पकमाल ने सुना जिससे उनको वैराग्य हो आया कि अब अपनी अन्तिम अवस्था है, सूरिजी के पास दीक्षा ले अपना कल्याण करें इत्यादि। व्याख्यान समाप्त होने पर लोग यथारुचि त्याग प्रत्याख्यान कर अपने अपने स्थान चले गए। तब राजा रानी ने अपने स्थान पर जाकर अपना राज पद्मकुँवर को देकर बड़े ही समारोह के साथ सूरिजी के पास दीक्षा स्वीकार करली और भी करीब पाँच सौ नर नारियों ने भी राजा राणी के साथ दीक्षा धारण की।

अब तो पद्मकुँवर पोलासपुर के राजा होकर न्यायोचित राज करने लगा। कुछ समय के बाद अजीतपुर के राजा पुरन्दर ने सुना कि पोलासपुर के राजा ने दीक्षा ले ली और एक बनिया की पुत्री परणा कर राज्य भी उसको दे दिया है। क्या बनिया भी राज्य कर सकता है, हां पुत्री परणाना दूसरी बात है वह स्वेच्छा से परणा सकता है पर अभी राजपूत मर नहीं गये हैं कि बनिया राज करे, अतः वह कोपित हो अपनी सेना लेकर पोलासपुर पर चढ़ आया, जिसकी खबर पद्मकुँवर को मिली तब वह भी अपनी सबल सेना लेकर मैदान में कूद पड़ा। दोनों ओर के वीर लड़ाकुओं का युद्ध प्रारम्भ हुआ व एक दूसरे पर जोरों से प्रहार होने लगा। कुछ समय तो दोनों तरफ के योद्धा रण जंग खेलने पर हार जीत का निर्णय नहीं हुआ पर तीसरे दिन राजा पुरंदर स्वयं चढ़ आया और जोरों से ललकार की और उसकी सैना में वीरता का जोश

आया जिसने पद्म राजा की सैना को पीछे हटा दिया। इस प्रकार अपना सैना पीछे हठती देख पद्मकुँवर अपनी तीनों पत्नियों का मर्दावेष बनाकर उन चारों ने सैना में आकर अपना पराक्रम ऐसा दिखाया कि दुश्मन सेना के पैर उखड़ गये इतना ही नहीं पर राजा पुरंदरगण ने पद्मकुँवर के पास आकर ऐसी सन्धि की कि राजा पुरंदर की पुत्री पद्ममंजरी पद्मकुँवर को परणा दी जाय और पुरंदर राजा सदैव के लिये पद्मराजा की आज्ञा का पालन करता रहे इस शर्त पर पुरंदर राजा को छोड़ दिया गया इस पर लोग कहने लगे कि राजा पुरंदर तो अपनी पुत्री को परणा ने को ही आया था, पर बनिया जाति में कितनी ताकत होती है। जिसकी परीक्षा की थी, खैर! राजा पुरंदर को बन्धन से मुक्त कर उसका राज्य उसको दे दिया बाद में राजा पुरंदर ने अपनी पुत्री पद्ममंजरी की शादी राजा पद्मकुँवर के साथ करने का निश्चय किया दोनों राज्यों में विवाह का महोत्सव होने लगा। पद्मकुँवर ने पहले तीन राजकन्याओं के साथ शादी की थी पर विवाह का उत्सव एक बार भी नहीं किया था, अतः इस समय आपके पास राज्यादि सब सामग्री मौजूद होने से बड़ा भारी महोत्सव करने का निर्णय कर लिया। दूसरे नगर के लोगों ने भी अपने राजा की शादी के लिये बड़े ही हर्ष के साथ नगर में हलचल मचा दी, इधर मन्दिरों में अष्टान्हिका महोत्सव तथा दानशालाएं वगैरह से गरीब अनाथ दारिद्री लोगों का दुःख दूर किया।

ठीक समय पर वरराज राजापद्मकुँवर की बारात बड़े ही समारोह के साथ चढ़ाई गयी। जब अजितपुर पहुँचे तो वहां के राजा प्रजा ने खूब जोरों से स्वागत किया और शुभ मुहूर्त में राजा पुरंदर ने अपनी पुत्री पद्ममंजरी का विवाह राजा पद्मकुँवर के साथ दिया। कर मोचन में बहुत से हस्ती, अश्व, रथ, दास, दासी और पुष्कल रत्नादि द्रव्य भी दिया। केवल राजा को ही नहीं पर बरात में आने वालों का भी पुष्कल द्रव्यादि से सन्मान किया जब राजापद्म० चतुर्थ स्त्री पद्ममंजरी को लेकर पोलासपुर आये तब नागरिक लोगों ने वधा कर नगर-प्रवेश कर वाया राजमहलों में जाकर पद्ममंजरी अपनी तीनों बहिनों से मिली तब शीलमंजरी वगैरह ने उसका स्वागत किया, अब तो राजा पद्मकुँवर अपनी चारों स्त्रियों के साथ आनन्द से सुख भोगता हुआ अपने राज का पालन करता हुआ धर्म का भी प्रचार करने लगा।

एक दिन पद्मकुँवर अपनी चारों स्त्रियों के साथ बैट कर बातें कर रहा

था उस समय शीलमंजरी ने कहां कि प्राणेश। अपने लोगों ने पूर्व जन्म में अच्छे पुण्य कर्म किये जिसका फल रूप में यह अच्छी सामग्री मिली है, पर भविष्य के लिये, अच्चे कर्मो का संचय करना चाहिये कारण एक दीपक से सहस्र दीपक बन सकता है, आज अपने पास पुण्य रूपी दीपक विद्यमान है अतः इस समय जो चाहो उतना ही कर सकते हैं। इस पर सबकी सम्मति ली कि पहले क्या चाहिये? सबसे पहले तो अपने राज्य में जहां देव दर्शन का साधन न हो वहां मन्दिर बना कर वीतराग की मूर्तियों की प्रतिष्ठा करवानी चाहिये तथा एक विश्राम मन्दिर अपने राज्य की स्मृति में भी करवाना चाहिये, दूसरा अपने राज्य में कोई भी निरापराधी जीव को न मारे, तीसरा अपने राज्य में स्थान-स्थान पर दानशालाएँ खोल दी जाय। इस पर पद्मकुँवर ने कहां कि यह कार्य तो आज से ही प्रारम्भ करवा दिया जायेगा पर खास तौर से तो जीवों को जैन धर्म की प्राप्ति हो और सब जीव जैन धर्म की आराधना कर अपना आत्म कल्याण करे इसका प्रयत्न करना चाहिये इनका विशेष प्रचार मुनियों द्वारा हो सकता है? शशीप्रभा ने कहा कि मुनियों की संख्या हमेशा कम होती है तो क्या अपने लोग इसका प्रचार नहीं कर सकते हैं? महिलाओं के अन्दर धर्म का प्रचार करने को मैं तैयार हूँ। रविप्रभा ने कहा मैं भी आपके साथ चल सकती हूँ इत्यादि चारों रानियों तथा पद्मकुँवर भी इस पुनीत कार्य के लिये तैयार हो गया। यह केवल मनोरथ ही नहीं पर पुरषार्थ के साथ अपनी राजधानी तथा आस-पास के नगरों में प्रचार कार्य शुरू कर दिया तथा जहां साधु साध्वियों का मिलाप होता वहां भी इसी बात की प्रेरणा दिया करते थे।

एक समय राजा पद्मकुँवर ने एक आम सभा कर नगर के सब लोगों को बुलाया और उनको संबोधन करके राजा ने कहा कि अपने राज्य में यदि कोई कार्य की आवश्यकता हो कि जिससे आम जनता को सुख सुविधा मिले तो मुझे कहो मैं कर सकता हूँ अर्थात राज्य की ओर से जनता को किसी तरह से तकलीफ न हो और राज्य की जो आमद है वह जनता की उन्नति के लिये व्यय करने का मैंने निश्चय कर लिया है इत्यादि। इस पर नगर के अग्रगण्य लोगों ने हर्षित हो कहा कि आपका राज्य दुनिया के लिये रामराज्य है आप ने जो विचार किया वह बहुत उत्तम है। इसके लिये एक कमेटी बनाली जाय और वे आपको सलाह देते रहेंगे इत्यादि, राजा के लिये जनता के अच्छे भाव थे। पद्मकुँवर राज्य की हुकूमत नहीं पर अपने को जनता का सेवक समझता

था और जनता की उन्नति करने का प्रयत्न करता रहता था।

इस प्रकार आनन्द में समय गुजर रहा था जिसके बीच पद्मकुँवर के चारों रानियों के चार पुत्र अर्थात एक एक रानी के एक एक पुत्र पैदा हुआ जिसके नाम—

शीलमन्जरी के पुत्र का नाम – सज्जनकुँवर
शशीप्रभा के पुत्र का नाम – चन्द्रकुँवर
रविप्रभा के पुत्र का नाम –सूर्यकुँवर
पदममन्जरी के पुत्र का नाम – राजकुँवर..........रखे गये।

एक मुनि को दान देने का फल किस प्रकार मिला है कि एक आदमी अपमानित होकर घर से निकलता है वह पुरुष चार राज कन्याओं और एक राज्य का नरेश होकर भविष्य के लिये अनन्त पुण्य का खजाना भर रहा है। हमारी कथा का नायक पद्मकुंवर की कथा आपके कर कमलों में विद्यमान है। पाठकों! इस कथा से आपको दो बातें संग्रह करनी चाहिये—एक सुपात्र को दान देना दूसरा सामग्री के होते हुए भविष्य के लिये पुण्य संचय परोपकारादि सुकृत के कार्य करना।

एक दिन पद्मकुंवर अपनी चारों रानियों के साथ बैठा हुआ विचार कर रहा था कि मुझे जो मिला है वह मेरी बहिन का प्रताप है और निमितकारण मेरे माता पिता है इस लिये मुझको देश में जाकर उनके उपकार का कुछ बदला चुकाना चाहिये। ऐसा विचार कर अपनी चारों रानियों की सलाह ली तो उन्होंने सम्मति देकर कहा कि हम भी आप के साथ चलने को तैयार हैं। तब पद्मकुंवर ने बहिन के लिये पांच लक्ष सोनइया व्यय कर वस्त्रभूषण तैयार करवाया तथा अपने राज्य के लिये एक कमेटी बना कर राज्य का अच्छा प्रबन्ध कर दिया और चार प्रकार की सेना लेकर शुभ मुहूर्त और अच्छे शुकनों के साथ प्रस्थान कर दिया। मार्ग में तीर्थों की यात्रा करते हुए तथा छोटे बड़े राजाओं को पराजय करके उनको अपने साथ लेते हुए क्रमशः चलते हुए जेतीपुर नगर के नजदीक पहुँच रहे थे कि उस नगर के राजा को खबर मिली तो वे घबराये कि यह कहां का राजा है, क्यों चढ़ आया है यह पता करने राजा ने अपने मंत्रियों वगैरह को उनके सामने भेजा तब वे जाकर राजा पद्मकुँवर से मिले और कहा कि नगर में लक्ष्मीपति मंत्री ने उनको अपने उद्यान में ठहरा

कर भोजन वगैरह सब तरह का प्रबन्ध करवा दिया है। बाद में सेठ लक्ष्मीपति को कहलाया कि आपके सालाजी इस ठाट से आपसे तथा अपनी बहिन से मिलने को आये हैं सेठजी सुन कर अपने महलों में जाकर सेठानी को कहा आपका भाई आया है यह सुन कर सेठानी ने निष्ठुर वचन से कहा कि फिर यहां क्यों आया है इस दारिद्री से मुझे क्या प्रयोजन है? पर सेठ ने पद्मकुंवर की रिद्धी का वर्णन किया तब तो सेठानी ने सेट पर कोपित होकर कहा कि मेरा भाई आया जिसको आपने घर पर लाकर भोजन का भी नहीं कहा, यह आपने कितनी भूल की है। जल्दी मंगाओ रथ? मैं भाई के सामने जाकर घर पर लाऊँगी, बस। क्या देरी थी? सेठ सेठानी रथ पर बैठ भाई के वहां गये उसका ठाठ देख बाइजी तो सब भूल गई जब भाई के पास गई तो भाई उठ कर सामने आया पैरों के हाथ लगा कर प्रणाम किया तब शीलमंजरी वगैरह चारों ने उठ कर बाइजी के पैरों लगी तब तो बाइजी का गर्व पानी होकर गल गया तथापि बाइजी ने गद गद शब्द से कहा भाई आप अलग ठहर कर शहर में मुझे बदनाम क्यों कर रहे है क्या मेरे वाग वगीचा वगैरा नहीं? क्या मकान नहीं था, क्या भोजन जितनी भी मेरी शक्ति नहीं थी, और दूसरे दिन का आमन्त्रण किया भाई ने स्वीकार कर लिया पहिले दिन राजा के मेहमान रहे दूसरे दिन बहिन के वहां गये। बहिन ने ४९ जाति के मिष्टान १८ शाक चटनियां भुंजिये पकोड़ आदि भोजन बनाया जब भाई भोजन करने बैठा तो सब पदार्थ परोस कर कहा भाई भोजन करो। तब भाई ने कहा वह लाओ जो उस समय दिया था। इस पर बहिन को याद आया । वह शरमाती हुई बोली भाई संसार स्वार्थ का साथी है अब आप माफ करावें इतने मनुष्यों में मेरी इज्जत के धब्बा न लगावें। भाई ने बहिन बहनोई के लिये जो पोशाक लाया था वह अर्पण करके कहा यह सब तुम्हारा ही प्रभाव है इत्यादि सब बात कर भोजन किया। बहिन की बात कहने पर सबके दिल में दान देने को सूची बढ़ी।

वहां से रवाना हो अपनी जन्मभूमि पद्मपुर की ओर प्रस्थान किया और क्रमशः चल नगर के नजदीक आये जब राजा को मालूम हुआ तब अपने बुद्धिमान मन्त्रियों को भेज कर खबर मँगवाई तब मालूम हुआ कि यह तो अपने नगर का सेठ गुणभद्र का पुत्र पद्मकुंवर है। इसका पुण्य यहां तक बड़ा है कि पोलासपुर का राज्य एवं चार राजकन्याओं से शादी कर अपने माता पिता की सेवार्थ आया है और कहा कि मैं कितना ही ऋद्धिमन्त हूँ पर राजा

का तो सेवक ही हूँ। इस पर राजा ने सेठ को बुला कर कहा कि आपका कुंवर बड़े ही ठाट से आया है हम लोग उसके सामने जाते हैं अतः आप भी हमारे साथ चलिये। पुत्र की ऋद्धि सुन कर सेठजी विचार कर मकान पर आये और सेठानी को सब हाल कहा तो उसके हर्ष का पार नहीं रहा। वे भी रथ में बैठ राजा के साथ हो गये और नगर से चार मील दूर जंगल में पद्मकुंवर का मिलाप हुआ बस। उस समय का आनन्द उन लोगों की आत्मा या परमात्मा ही जानते हैं। कई वर्षों से गया हुआ पुत्र एक राज्य चार राजकन्याओं चार पौत्रादि ठाट से मिले तब आनन्द का तो कहना ही क्या? इधर तो पदम० हस्ती से उतरा उधर राजा भी हस्ती से उतरा सेठ सेठानी भी रथ से उतर कर सबसे मिले भेंटे तब शीलमंजरी आदि चारों स्त्रियों ने अपने पुत्रों के साथ सास ससुर के एवं राजा रानी के पैरों में नमस्कार किया बाद में सब चलकर पहले तो राज सभा में आये वहां राजा एवं नागरिकों के आग्रह से पदम ने अपनी कथा आदि अन्त तक कही जिसको सुनकर सब लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। और पदम के दान का अनुमोदन किया बाद में सेठजी और पदमकुंवर वगैरह राजा की आज्ञा लेकर सेठजी के घर आये उस समय का आनन्द का हाल लिखना तुच्छ लेखनी की शक्ति के बाहर की बात है।

अब पद्मकुंवर अपने कुटुम्ब के साथ आनन्द में रहने लगा वहां का राजा बराबर पद्मकुंवर को अपने पास बुला कर अनेक प्रकार की राज्य संबन्धी बातें कर रहे थे और पद्मकुंवर राजा को यही सलाह दिया करता था कि संसार असार है पूर्व पुण्य से यहां अच्छी सामग्री मिली है जिसका सदुपयोग करना चाहिये और आत्मा में त्याग वृत्ति रखनी चाहिये। यह बात केवल दूसरों को कहने की ही नहीं थी पर पदम खुद इस पर अमल करता था। पदम ने यहां भी बहुत से मन्दिर, धर्मशालाएँ, दानशालाएँ, तालाब कुंए सदाभरतादि सुकृत के अनेक कार्य करके अनन्त पुण्य का संचय किया था। जिसको देख राजा का दिल भी सुकृत करने में लग गया। इस प्रकार कई अर्सा निकल गया तब पदम का विचार पोलासपुर की ओर जाने का हो रहा था। पर राजा व सेठ सेठानी आज्ञा नहीं देते थे।

एक दिन आचार्य विमलतेजसूरी अपने शिष्यों के परिवार से उद्यान में पधारे। जब बधाईदार ने आकर बधाई दी जिससे राजा और पद्म ने पुष्कल द्रव्य दिया तथा नगर में चहल पहल मचगई राजा प्रजा बड़े ही समारोह के

साथ सूरिजी को वन्दनाथ गये और सूरिजी ने अपनी मधुर वाणी से धर्म देशना दी। जिसमें मुख्ययता कहा कि संसार असार है स्वल्प जीवन में जीव कितनी तृष्णा रखता है आखिर परभव अकेले को ही जाना एवं पुण्य पाप ही साथ चलने वाला है अतः प्रत्येक जीव को धर्म की आराधना करनी चाहिये इत्यादि उपदेश सुनकर राजा ने कर जोड़ पूछा कि हे प्रभो? हमारे नगर में भाग्यशाली पद्मकुंवर या शीलमंजरी ने पूर्व भव में क्या सुकृत किया था हम सुनना चाहते हैं आप ज्ञानी है कृपा कर फरमावें। तब सूरिजी ने कहा—

हे नरेश! अचलपुर में एक यशपाल नाम का बड़ा ही धनवान सेठ बसता था आपके कमला नामक स्त्री थी और चार पुत्रों पर एक सुन्दरी नाम की पुत्री भी थी सेठजी का कुटम्ब जैनधर्म का उपासक था इतना ही नहीं पर सेठजी के घर में देरासर भी था जिसमें एक माणकरत्न की मूर्ति भी थी उसी नगर में एक सुखदेव ब्राह्मण और उसके पार्वती नामक पुत्री भी रहती थी। सेठ पुत्री सुन्दरी और पार्वती के बालपना से ही आपस में प्रेम था। इन दोनों के आपस में धर्म भेद था जिसके लिये आपस में कभी कभी वाद विवाद भी हुआ करता था एक दिन सुन्दरी का स्थापनाचार्य पार्वती ने छिपा दिया जब प्रतिक्रमण के समय में सुन्दरी ने देखा तो स्थापनाजी नहीं मिले तब कुछ समय तक सुन्दरी फिक्र करती हुई क्रिया नहीं कर सकी तब पार्वती ने कहा सुन्दर देख यह क्या है सुन्दरी ने देखा तो स्थापनाजी। तब उसने कहा क्या पार्वती तुमने ही स्थापनाजी को छिपाया था? नहीं सुन्दर मैंने यहां पड़ा देखा तब तुम को बतलाया है खैर।

एक दिन तीन साध्वी जी सुन्दर के घर पर आई जिसको देख सुंदर ने बड़े ही हर्ष के साथ वन्दन किया और आहार पानी भी प्रदान किया इसको पार्वती देख रही थी साध्वी के जाने के बाद पार्वती ने निन्दा कर कहा छि ऐसे मलीन को तुम कैसे गुरु मानती हो तब सुन्दर ने कहा-पार्वती क्या तू पगली है इन साध्वियों ने संसार का त्याग किया और विशुद्ध ब्रह्मचर्य पालन करती है। इनके गुण तू नहीं जानती है पर याद रख ऐसी महासतियों की निन्दा करने से इतने कर्म बन्धेगा कि भवभव में छूटने मुश्किल है। इत्यादि सुन्दरी के बचन सुन पार्वती पश्चाताप करने लगी। बाद एक दिन सुन्दरी और पार्वती समय पाकर साध्वी जी के उपाश्रय गई। साध्वी ने उन दोनों को धर्म देशना दी तथा

जीव हिंसा, झूठ बोलना, चोरी करना, आदि दूसरे की स्वल्प भी वस्तु गुप्तपने लेना या हँसी में भी छिपा देना, मैथुन जिसमें गृहस्थ को स्वदारा संतोष व्रत, और परिग्रह का ममत्व न बढ़ाना तथा इनके अलावा क्रोधादि सब अठारह पाप हैं इनसे ही जीव चौरासी में भ्रमण करता है इत्यादि साध्वी का उपदेश सुन कर उन दोनों ने जैन धर्म के कई नियम व्रत धारण किये।

एक दिन पार्वती ने अकेली साध्वी जी के पास जाकर पूछा कि यदि कोई व्यक्ति किसी का धर्म साधन उपकरण ले जाय या छिपा दे उसको क्या प्रायश्चित होता है, साध्वी ने कहा बहिन इस पाप का तो जबर्दस्त दण्ड मिलता है ऐसा काम करने से अनन्त काल तक भी दुःख से नहीं छुटता है इत्यादि पार्वती सुन कर बहुत घबराई कि मैं पापिनी इस पाप से कब छुटूँगी अतः मैं दीक्षा लेकर इस पाप की शुद्धि करलूं क्यों कि ऐसा पाप मैं दूसरे को कह भी नहीं सकती हूं। आखिर पार्वती ने साध्वी जी के पास दीक्षा ले ली और घोर तपस्या करती हुई संयमपाल कर व्यन्तर देव में गई वहाँ से चल कर हथिणी हुई और वहाँ से मर कर शीलमंजरी हुई है। पूर्व भंव के पाप के कारण पति का वियोग अन्तराय देखा और दीक्षा लेकर तप संयम की आराधना से राजकन्या और इतना सुख मिला है।

पद्मकुंवर का पूर्व भव— अचलपुर में एक यशधवल सेठ और सुमत सेठानी साधारण स्थिति वाले दम्पति रहते थे। जैसे वे धर्म में दृढ़ थे वैसे ही वे दान की रुचि वाले भी थे। सेठजी साधारण व्यापार करते थे तब सेठानी रुई मंगवा कर सूत काता करती थी। जिससे वह दम्पति का कपड़ा सेठानी के सूत की बचत से बना लिया जाता था। सेठानी ने अपने पति के योग्य शीत काल में ओढ़ने के लिये खेस बना कर रखा था। भाग्यवश सेठजी उस कपड़े को धारण कर गामान्तर जा रहे थे मार्ग में एक तपस्वी ध्यान में खड़े थे पर शीत के कारण थर-थर कांपते थे इस पर सेठजी ने अपना कपड़ा ध्यानास्थित मुनि पर डाल दिया और बहुत हर्ष मनाया। बाद जब सेठ घर पर आया और अपनी पत्नी को वस्त्र की बात कही तब तो सेठानी के हर्ष का पार नहीं रहा। एक पड़ोस में रहने वाली बहिन ने जोरों से अनुमोदन दिया और मन में विचार किया कि कभी ऐसा सुयोग्य हमको भी मिलेगा इत्यादि। सेठ सेठानी पड़ोसिन

तथा अनुमोदन करने वाली और सुन्दरी एवं पार्वती वहां से काल कर देवयानी में गये वहाँ से चल कर सेठ व्यापारादि में माया करने से हस्ती का भव किया पार्वती हथिणी हुई शेष तीन बहिनों ने राज्य घराने में जन्म लिया तथा हस्ती का जीव पद्मकुंवर हथणी का जीव शीलमंजरी हुई।

इस प्रकार सूरिजी से पूर्व भव सुन कर पद्मकुंवर शीलमंजरी को विचार करते हुए जातिस्मरण ज्ञानोत्पन्न हुआ और अपना पूर्व भव हस्तामल की तरह देख कर सूरिजी को नमस्कार कर कहा प्रभो! आपका कहना अक्षरांश सत्य है तथा अन्य लोगों ने भी उन पांचों के पूर्वभव सुनकर पाप से भय और दानादि पुण्य का अनुमोदन किया तथा राजा रानी तथा सेठ सेठानी ने मुनि व्रत लेने के लिये सूरिजी से प्रार्थना की तब सूरिजी ने आज्ञा दी। फिर तो क्या देरी थी राजा ने अपने पुत्र को राज्य दे दिया और सेठ सेठानी ने अपने पुत्र पद्मकुंवर को अपना घर संभला दिया पर पद्मकुंवर ने कहा पिताजी आप इस संसार को जहर समझकर छोड़ रहे हो तब वह जहर मुझे क्यों देते हो मैं तो आप के साथ दीक्षा लेकर आपके चरणों की सेवा करना चाहता हूं। सेठजी ने कहा पुत्र अभी तुम संसार में रह कर धर्म के कार्य एवं प्रचार करो बाद समय आने पर दीक्षा लेना। खैर पिता का कहना शिरोधार्य कर राजकुंवर तथा सेठ पुत्र ने दीक्षा का बड़ा भारी महोत्सव कर उन दीक्षा लेने वाले राजादि के अलावा ५०० नर नारियों को सूरिजी से दीक्षा दिला दी।

पद्मकुंवर कुछ अर्सा वहां ठहर वहां का प्रबन्ध कर अपनी चारों स्त्रियों चारों पुत्रों को लेकर अपने राज्य पोलासपुर में आये वहां आने के पश्चात् उन्होंने अपनी स्त्रियों के साथ धर्म कार्य एवं धर्म प्रचार में लग गये अतः धर्म का खूब प्रचार एवं उद्योत किया उधर उनके चारों पुत्र भी बड़े होकर लिखने-पढ़ने में होशियार हो गये और उन चारों ने अलग-अलग चारों राज्य और स्थापित कर दिये।

पद्मकुंवर के पिताजी दीक्षा में बिहार करते हुए पोलासपुर पधारे जब इस बात की खबर हुई तब राजा पद्म ने नगर की भारी सजावट करवा कर अपनी सेना और नागरिकों के साथ मुनिश्री की वन्दना करने को गये मुनि ने आये हुए लोगों को धर्म देशना दी। विशेष में पद्मकुंवर और उनकी चारों

पत्नियों को ऐसा उपदेश दिया कि वे अपने चारों पुत्रों को राज्य तो पहले से ही दे रखा था। उन्होंने दीक्षा की तैयारी कर नगर में घोषणा करवा दी कि राजा पद्मकुंवर अपनी पत्नियों के साथ दीक्षा ले रहे है। यदि किसी को सहायता की जरूरत हो तो राजा दे सकता है, दीक्षा के लिये तैयार हो जाइये इस पर १००० नर नारी मुक्ति के उम्मीदवार तैयार हो गये। राजा सज्जनकुंवर ने जो शीलमंजरी का पहला पुत्र पोलासपुर का राजा था उसने दीक्षा क
२८७२८८तित्थयर वर्ष-२६, अंक ६ I बड़ा भारी महोत्सव किया और उन भावुकों ने मुनिराज के कर-कमलों से भगवती दीक्षा स्वीकार करली बस। अब वे ज्ञान दर्शन चरित्र की आराधना में संलग्न हो गये जिसमें पद्म मुनि की योग्यता पर उनको आचार्य पद से विभूषित किया तथा साध्वी शीलमंजरी को प्रवृतनी पद दिया गया।

अब तो आचार्य पद्म ने भूमण्डल पर बिहार कर अनेक भव्य जीवों का उद्धार किया अन्त में शुक्ल ध्यान एवं क्षपक श्रेणी आरूढ हो केवल ज्ञान प्राप्त कर दीर्घ काल भूमि पर बिहार कर जैन शासन की खूब प्रभावना कर अन्त में मोक्ष के अक्षय सुखों में जाकर विराजमान हो गये। इसी प्रकार साध्वी शीलमंजरी भी कर्मों का क्षय कर मोक्ष गई। शेष साधु साध्वियों ने भी अपना कल्याण किया।

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,(Resi) 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 247-6874, (Resi) 246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Kolkata - 700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2208967, (Resi) 2471750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 226-2418, (Resi) 475-2730, 476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (Resi) 239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 238-8677/1647,239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 348-8576/0669/1242
(Resi) 225-5514, 237-8208, 229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 282-4649, (Resi) 247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata
Ph: 237-4132/236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (Resi) 238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 233-1766/238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950 (Fact). 557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 229-5047, 9110

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Kolkata - 700 026
Phone : 476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 247-7880, 247-8663
(Res) 247-8128, 247-9546

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street Kolkata - 700 013
Ph: 244-4436

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 235-2076, 235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi: 247 6526/6638/2405126
Telex: 021 2333, ARBI IN, Fax : 226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA RARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

H. R. ELECTRONICS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare Parts
Siemens, English Electric L.T./L.K.B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No -712A
South Block, Kolkata - 700 001
Room No.- 314, 3rd Floor
Phone : (O) 235 5009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 230 0216, (R) 235 9657/9312

CHUNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 7764, (R) 666 4541, 530 9286

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Dealers of
J. K. Steel File. Drills. I. T. Drills. Tapes Center
BIPICO - ECLIPSE Hacksaw Bledes
"FREEMANS" GK Measuring Tapes, 18/C Sukeas Lane,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-2345, 242-4461

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 232 6040, (R) 684181

JAI CHAND VINOD KUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Kolkata - 700 007
Phone : 238 3328/9678, 239 3450
Fax : 239 3450, 247 7526
Telex : 217761 JVS-IN Grams MINNI-BROS

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

S. VIJAY CHAND
Vijay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 238 1388 (R) 247 6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Kolkata - 700 007

BOTHRA SHIPPING SERVICES
2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Fax No. 220-6400 Ph: 220-7162
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007
Phone : 227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Kolkata - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140
(Resi) 352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 220-4779/0131/5721

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)230-1329, 232-1033
Fax : 91-33-2302413

MANIK CHAND MANOJ KUMAR
11, Clive Row, 3rd Floor, Room No. 4,
Kolkata - 700 001, Phone : 242-4131/4756

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Phone : 220-0874/9372/221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C.
Kolkata - 700 019
Phone : 287-0448

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread) .

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street. Kolkata 700 016
Tel : 229 8228. Fax : 229 3882. 245 7562
e-mail : info@subhash.com. website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street. 3rd floor. South Block. Kolkata-700016 Ph:(033)229-8228.
Registered Office: Subhash House. F-27 2 Okhla Industrial area. Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94. Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8 2 Ulsoor Road.
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15. Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply. fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible. on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare. then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment. we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental. infrastructural. civil and power projects. The truth is we design. build. operate and maintain with equal skill. Moreover. we follow the foolproof Engineering. Procurement and Construction System. Simply put. we are a single point responsibility. A one stop shop.

So. next time. somebody suggests that deserts by definition connote dryness. you recommend he visit us for a lesson in reality.

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

卐

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 233-1609, 239-8628

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 634-6441/644-6442
Fax: 6346287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 514-4496, 513-1086, 513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।

अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on

-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)

Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1 Dumb Barges of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:

Winco Maritime Limited, London

-Puyvast Chartering BV., The Netherlands

-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi

******

We are agents at Mangalore for:

The Shipping Corporation of India Ltd.

(The Indian National Line)

******

Regd. & head Office:

222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.

Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.

Fax: 2872664.

Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE: SHIPONTIME

E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

Tech/W.B./R.N.P.-45/2002
Vol. XXVI No. 7 TITTHAYARA October 2002
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225